Research Paper
E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | JANUARY 2025

ताम्रपाषाणकालीन स्थल आहड़ एक अध्ययन

भैंरू लाल कुम्हार [1]

[1] **सहायक प्रोफेसर (वीएसवाई) (इतिहास) सरकारी कॉलेज गुलाबपुरा (भीलवाड़ा) राजस्थान.**

ABSTRACT:

देश में प्राचीन काल के गौरवशाली इतिहास को छोड़कर हमें उस समय की परंपरा और विचार, दृष्टि से संबंधित पुरास्थलों को जानना चाहिए और उसी स्थल से प्राप्त पुरासामग्री का अध्ययन करना चाहिए जिससे हमारा पुण्य कर्तव्य बनता है।

इसी ऐतिहासिक कड़ी में हम देश के एक महत्वपूर्ण पुरास्थल आषाढ़ के ऐतिहासिक वृत्तांत और आस्तिकत्व को भलीभांति देखने का प्रयास करते हैं, मूलतः आषाढ़ पुरास्थल देश के राजस्थान राज्य में एक ताम्रपाषाणिक, पुरास्थल के रूप में काफी महत्वपूर्ण पुराण स्थल आ रहा है जो हमारी प्राचीन सिंधुघाटी सभ्यता के समकालीन और गौरवशाली पुरास्थल रूप में प्रसिद्द है। यह स्थल भी एक तट पर नदी पर स्थित है जो उपजाऊ मिट्टी, पशुपालन और जनजीवन के लिए जल की सहजता से युक्त है, यह स्थल आपके लिए दो महत्वपूर्ण संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करता है जिनमें ताम्र (तांबा) काल की संस्कृति और पत्थर (पाषाणकाल)वाली संस्कृति मिश्रण के (मिलन स्थल) का प्रतिष्ठापित है, आहड़ की चट्टानी मिट्टी से बनी महत्वपूर्ण चट्टानें। यह संस्कृति प्राचीन सैंधव सभ्यता के निकट (समकालीन) दृष्टिगत है।

KEYWORDS:

ताम्रवती नगरी, ताम्रपाषाणकाल, धूलकोट, बनास संस्कृति, आघाटपुर, सैंधव समकालीन संस्कृति, ग्रामीण संस्कृति, लाल व काले मृदभांड.

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
26th January 2025	30th January 2025

(1) ताम्रपाषाण पुरास्थल आहड़ की अवस्थितिः–

देश की प्राचीन सभ्यताओ मे से एक आहड़ स्थल (सभ्यता) देश के राजस्थान राज्य मे दक्षिण–पूर्वी दिशा में स्थित उदयपुर जिले में आहड़ नदी तट पर अवस्थित है ,आहड़ सभ्यता स्थल का प्राचीन नामकरण आहड़ या आयड़ नदी के तट पर बसाव के कारण इसका समीकरण किया गया है तथा इसका वर्तमान नामकरण बनास नदी से अभिहीत किया जाता है जिसके कारण इसे बनास संस्कृति भी कहा जाता है , आहड़ पुरासभ्यता मूलतः एक ताम्रपाषाणकालीन संस्कृति थी जिसे ताम्रवती संस्कृति(तांबे वाली सभ्यता या संस्कृति) भी कहा जाता है ।

आहड़(बनास नदी घाटी, दक्षिण पूर्वी राजस्थान में अवस्थित) सभ्यता को भारत की सबसे प्रारंभिक ताम्रपाषाणकालीन ग्रामीण संस्कृति भी कहा जाता है जो लगभग 3000 ई.पू. से 1500 ई.पू. में राजस्थान मे यह अस्तित्व में थी, आहड़ सभ्यता को प्राचीन सिन्धुघाटी सभ्यता के समकालीन सभ्यता भी माना जाता है यहाँ पर सैन्धव सभ्यता के ही समकालीन विभिन्न पुरातात्विक सामग्रीयों का साक्ष्य पाया गया है ।

(2) आहड़ पुरास्थल का अध्ययनः–

आहड़ पुरास्थल (संस्कृति)जिसे बनास संस्कृति के नाम से भी जाना जाता है यह एक ताम्रपाषाणकालीन पुरातात्विक सभ्यता संस्कृति थी जो लगभग 3000 ई.पूर्व से 1500 ईसा पूर्व तक हमारे देश के दक्षिण पूर्वी राजस्थान में अस्तित्व में रही व काफी फली फूली इसे प्राचीन सिंधु घाटी सभ्यता के समकालिन और निकटवर्ती सभ्यता के रुप में जाना जाता है,यह सभ्यता ताम्रपाषाण की प्रधानता के कारण इसे ताम्रवती सभ्यता भी कहा जाता है इस पुरास्थल को 10वीं 11वी शताब्दी में इसको आघाटपुर या धूलकोट या आघाटकिला के नाम भी जानते थे।

आहड़ सभ्यता स्थल की खोज 1953 में अक्षयकीर्ति व्यास ने की थी तथा इसका उत्खनन कार्य सर्वप्रथम रतन चन्द्र अग्रवाल ने 1956 में एंव 1961–62 में एच. डी.सांकलियॉ के निर्देशन में यहॉ पर वृहत स्तर पर उत्खनन का कार्य किया गया , आहड़ सभ्यता मूलतः 4000 वर्ष पुरानी सभ्यता मानी जाती है यहॉ पर बस्तियों के आठ स्तर मिले है जिनसे पता चलता है कि यह सभ्यता अपने प्रारम्भ से लेकर 18वीं सदी तक यह सभ्यता कई बार बसी व उजडी एक अनुमान के मुताबिक आहड़ के आस पास तांबे की खानो के पाये जाने के साक्ष्य पाये गये है जिस कारण ताम्र उपलब्धता के कारण यहॉ के लोग ताम्र धातु के उपकरण बनाने में दक्ष थेयहॉ पर उत्खनन के चतुर्थ चरण में ताम्र निर्मित दो कुल्हाड़ियो के साक्ष्य पाये गये है ।

ताम्रपाषाण स्थल आहड़ सभ्यता का सम्पर्क अन्य संस्कृतियो से भी रहा जिसमे हडप्पा, एरण,कायथा,नवदाटोली जैसी संस्कृतियां महत्वपूर्ण थी, यहॉ से उतरी काले चमकीले पात्र युक्त मिटटी की मुहरे ,इंडो ग्रीक शासको के सिक्के तथा कुषाण पात्रो के आधार पर इस काल कर निर्धारण ईसा पूर्व तृतीय शताब्दी से ई.पू. द्वितीय शताब्दी किया जाता है। इस प्रकार यह काफी संस्कृतियों से अभिन्न रुप से जुड़ी हुई थी।

(3)आहड़ पुरास्थल की अर्थव्यवस्थाः–

अर्थव्यवस्था किसी भी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण अभिन्न अंग रहा है तथा संस्कृति के अस्तिव को बनाये रखने हेतु उसकी अर्थव्यवस्था को मजबूत होना आवश्यक होता है उसी प्रकार आहड़ सभ्यता में धातु का कार्य यहॉ के लोगो की अर्थव्यवस्था का प्रमुख साधन रहा है, यहा के लोग तांबा गलानाजानते थे जो यहॉ पर बहुसंख्या में तांबे के उपकरण व अन्य औजार बड़ी मात्रा में प्रयोग करने के साक्ष्य पाये गये है।

यहॉ के लोग कृषि तथा पशुपालन भी करते थे,यहॉ पाये जाने वाले तांबे के भण्डारो ने आसपास के लोगो को काफी मात्रा में आकर्षित किया तथा यहॉ उन्होने तांबे से सम्बन्धित खनन–उधोग गतिविधियॉ की होगी ।

आहड़ से मिले मनको तथा तकली के नीचे के चक्के से इनकी बनावट 2000 ई.पूर्व में टर्की व ईरान में इसी प्रकार के पदार्थ से मिलती जुलती प्रतीत होती है इस प्रकार यह स्पष्ट होता हे कि यह सभ्यता किसी न किसी रुप से पश्चिम – एशिया के मानवीय विचारो से सम्बन्धित रही होगी यहॉ के उत्खनन से प्राप्त ठप्पो में रंगाई–छपाई के व्यवसाय के उन्नत होने के साक्ष्य प्राप्त हुऐ है। अतः आहड़ की अर्थव्यवस्था काफी सुदृढ प्रतीत होती है ।

(4) आहड़ की स्थापत्य कलाः–

स्थापत्य कला किसी भी संस्कृति का एक आवश्यक अंग समझा गया है उसी प्रकार आहड़ के लोग अपने निवास हेतु मकान बनाने के लिये धूप में सुखाई गई ईटें व पत्थरो का प्रयोग करते थे इनमे भी बडे व चोकोर मकानो को बनाने के लिये पत्थर की नींव डालकर बनाते थे जबकि मकानो की दीवारों के लिये मिटटी की ईंटो का प्रयोग करते थे।

आहड़ के लोग मकानो की छत पर बांस के डंडे बिछाकर उन पर मिटटी का लेप कर लेते थे, यहॉ के मकानो में योजनानुसार बीच में खुला स्थान या आंगन या गली रखने की व्यवस्था थी तथा जल की उपयुक्त निकासी हेतु नालियो के भी प्रमाण मिले है इस प्रकार

आहड़ की नगर स्थापत्य कला उस समय काफी सुस्पष्ट व सरल दिखाई पड़ती है।

(5) आहड़ की मृदभाण्डकला व उपकरण तकनीकः–

3000 से 1500 ई.पूर्व की आहड़ संस्कृति में यहां की मृदभाण्डकला व प्रयुक्त तकनीक का साक्ष्य पाया गया है ।

आहड़ के उत्खनन मे मृदभाण्ड सर्वाधिक मात्रा में पाये गये हे जिनमे भी भोजन के बर्तनो के पिछे वाली जगह (पाश्रवभाग) मे काला रंग प्रयुक्त किया गया है तथा किनारो पर लाल रंग प्रयुक्त हुआ है तथा कुछ बर्तनो में सफेद रंग मे चित्रकारी की गई है जिस कारण यह मृदभाण्ड़कला लाल काले मृदभाण्ड़ वाली संस्कृति स्थल सिद्ध करते है इसके अलावा अन्य उपयोग के बर्तनो की बनावट इन बर्तनो से भिन्न है इन बर्तनो के किसी प्रकार की चित्रकारी नही की गई परन्तु उन्हे छोटे छोटे टुकड़ो से सजाया गया है जो केवल बर्तनो के उपरी भाग में है परन्तु बर्तनो का निचला हिस्सा खुरदरा है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ये बर्तन जमीन के अन्दर गाड कर रखे जाते थे आहड़में नुकिले व विशिष्ट पत्थरो का उपयोग ब्लेड़ के रुप में वस्तुओ को काटने में नही करता था क्योकि उनके पास धातु के औजार आहड़वासी पर्याप्त मात्रा में घेरलू उपकरण तथा अन्य औजार जिसे वो लोग धातु व पत्थरो द्वारा निर्मित करके उपयोग में लेते थे बहुतायत में साक्ष्य पाये गये है आहड़वासी अन्य गतिविधियो तथा तकनीक में भी काफी कुशल थे ये लोग सामूहिक चूल्हो के निर्माण मुहरे व ठपे, ताम्र उपकरण , अनाज पिसने के पत्थर , शंख व पक्की व मिटटी की चुड़ियां, काले व लाल मृदभाण्ड़ मैल उतारने के झॅावे, पत्थर व मिटटी के मनके आदि के निर्माण में आहड़वासी काफी कुशल थे जिनका बहुतायत में साक्ष्य पाया गया है तथा आहड़वासी अपने आसपास की अन्य समकालीन सभ्यताओं से भी काफी निकट रुप से जुड़ा हुआ था यह गिलूण्ड़(राजसमन्द) ओझियाणा पाटन आसीन्द (भीलवाड़ा), बालाथल(उदयपुर)तथा जैसे सभ्यता स्थलो से जुड़ी हुई प्रतीत होती है ।

(6) आहड़ की सामाजिक व घेरलू स्थितिः–

आहड़वासी कृषि व पशुपालन कार्य भी करते थे, आहड़ के उत्खनन मे एक मकान से 4 से 6 बड़े चूल्हे मिले जिससे वहॉ की सामूहिक भोजन बनाने की व्यवस्था या कोई उत्सव के आयोजन पर सामूहिक भोज की अवधारणा परिलक्षित होती है आहड़वासी मृत शरीर को गाडने के साक्ष्य पाये गये है ।

इस प्रकार ताम्रपाषाणकालीन आहड़ संस्कृति से हमें लगभग 4000 वर्ष पुरानी परम्परागत समाज, संस्कृति, कृषि, अर्थव्यवस्था, पशुपालन, उधोग धन्धे तथा धातु उपकरण तकनीक का अच्छी तरह से पुरातात्विक साक्ष्य पाये जाने से उस समय की संस्कृति की उन्नति, वैभव आदि की जानकारी मिलती है।

यहॉ के लोग गेहूॅ तथा जौ की खेती करते थे तथा दैनिक उपयोगार्थ उपकरणो में तांबे का पर्याप्त मात्रा में उपयोग किया जाता था आहड़ की बनावट नदी किनारे होने तथा प्रचुर मात्रा?में कृषि करना तथा पशुपालन की गतिविधियों के कारण इसे सैन्धव संस्कृति के समकालीन रखा जाता है क्योकि सैन्धव संस्कृति भी प्राचीन सिन्धु व उसकी सहायक नदियों के किनारे अत्यन्त फली– फुली अतः आहड़ सभ्यता अपने आप में एक महत्वपूर्ण पुरास्थल के रुप में प्रसिद्व रहा है ।

(7) आहड़ सभ्यता की वर्तमान साम्यताः–

ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थल आहड़ का अस्तित्व आज से लगभग 4000 वर्ष पुरानी सभ्यता रही है । परन्तु यह हमें उस काल कि सामाजिक, आर्थिक, कृषि व पशुपालन के बारे में एक तरह की मार्गदर्शक सभ्यता प्रतीत होती है, ।आहड़ संस्कृति वर्तमान मे एक अत्यन्त ही महत्वपुर्ण पुरास्थल मानी जाती है तथा मेवाड़ की प्राचीन वीर भूमि महाराणा उदयसिंह, वीर सिरोमणी महाराणा प्रताप की रणस्थली(हल्दीघाटी कुंभलगढ राजसमन्द)इसी के अर्न्तगत है अर्थात आहड़ (उदयपुर) आरम्भ से थी एक महत्वपूर्ण संस्कृति के रुप मे प्रसिद्व रहा तथा वर्तमान में भी यह अरावली मे सुन्दर मनोरम, झीलो की नगरी, वीरो की नगरी के रुप में ज्यो कि त्यो विद्यमान है ।

इस प्रकार यहॉ के प्राचीन गौरव को वर्तमान समय की परिस्थितियों से समीकरण देखा जाये तो यह स्थल एक ऐतिहासिक , वीर भूमि , सौन्दर्य व रमणीक स्थल के रुप में प्रसिद्ध है।

आहड़ संस्कृति से सम्बन्धित वर्तमान में 90 से अधिक स्थलो की पहचान की जा चुकी है।

आहड़ संस्कृति की विशेषताऐंः–

भारतीय ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थल आहड़ से विभिन्न प्रकार के पुरासाम्रग्रियो का साक्ष्य मिलना अपने आप में महत्वपूर्ण है परन्तु वहॉ की तकनीक कोशल, उपकरण, मृदभाण्ड़ तकनीक, पशृपालन आदि विशेष महत्वपूर्ण है ।

आहड़ की निम्न विशेषताऐ हैः–

(1) तांबे की उपयोगिताः–

आहड़वासी ताम्र धातु का बहुतायत में उपयोग लेते थे जिनमे वे लोग इस धातु से विभिन्न प्रकार के उपकरण निर्मित करके कृषि व पशुपालन में इनका उपयोग करते थे।

(2)विभिन्न उपकरणो का निर्माण :–

आहड़वासी विभिन्न प्रकार के उपकरणो का निर्माण करते थे जिनमे तांबे की कुल्हाड़िया, अंगुठिया, चुड़ियां,ताम्र निर्मित विभिन्न प्रकार की कलाकृतियां व ताम्र निर्मित चदरे,मिटटी व पत्थर के मनके तथा विभिन्न प्रकार के आभूषण, सिर–खुजाने वाला उपकरण, द्वार को खोलने वाला उपकरण, पशु पक्षी की आकृति युक्त मिटटी के खिलोने तृतीय ईसा पूर्व से प्रथम ईसा पूर्व की यूनानी मुद्राऐ है

(3)उन्नत मृदभाण्ड कलाः–

आहड़ वासी प्राकृतिक रुप से मिटटी को विभिन्न तरह के मृदभाण्डो के निर्माण मे उपयोग लेते थे जिनके उपर विभिन्न रंगो का इस्तेमाल करके इस पर काफी सुन्दर चित्रकारी करते थे इस प्रकार आहड़ की चित्रकारी व मृदभाण्ड़ निर्माण कला काफी सुन्दर व आकर्षक थी इतना ही नही आहड़ वासी इनको विभिन्न प्रकार से उपयोग मे लेते थे।

(4)अनाज सहेजने की उन्नत कलाः–

आहड़ सभ्यता के लोगो को अपने भविष्य में अनाज रखने की आपूर्ति पर्याप्त रखने हेतु इन्होने अनाज को मिटटी के घड़े उपकरणो में सहजकर रखने की उन्नत तकनीक का पर्याप्त ज्ञान था जिन्हे स्थानीय भाषा में इनको (मिटटी के अनाज सहेजने के उपकरण) गोरे या कोठे कहा कहा जाता था

(5)उन्नत संस्कृतिः–

आहड़ पुरासभ्यता में एक उन्नत संस्कृति का दर्पण दिखाई देता है जिसमें बैल की पुजा के प्रमाण, संयुक्त परिवार प्रथा के प्रमाण, तांबे के औजारो को निर्माण, उन्नत कला ,रंग संयोजन (विशेषत मृदभाण्ड़ो मे लाल व काला रंग प्रयोग करना)आदि

(6)ग्रामीण संस्कृतिः–

यह सभ्यता मूलतः एक ग्रामीण संस्कृति थी जिसमे लोग शांतिपूर्वक जीवन यापन करते थे।

<u>आहड़ सभ्यता का महत्वः–</u>

वैसे तो आहड़ पुरास्थल ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता का एक अदभुत पुरास्थल हे ही परन्तु भारतीय संस्कृति में ताम्र पाषाण कालीन स्थल आहड़ का एक महत्वपूर्ण स्थान हे क्योंकि आहड़ में 4000वर्ष पुर्व का मानव तांबे तथा पत्थर को अपने जीवन में ज्यादा से ज्यादा उपयोग में लिया जिसके कारण इस संस्कृति का नामकरण ही ताम्र पाषाण संस्कृति कहा जाने लगा।

आहड़ से कृषि व पशुपालन के बारे मे उन लोगो की व्यवसायिक सर्तकता हमें उनकी तरफ आकर्षित करती है और वो लोग अनाज का भी महत्व समझते थे। डॉ गोपी नाथ शर्मा ने इसे 1900 ई.पू. से 1200 ई.पू. दौरान इसका समृद्व काल बताया यहॉ से टेरा कोटा से बनी वृषभ (बैल) की आकृतियॉ मिली है जिन्हे बनासियन बुल की संज्ञा दी जाती है ।

निष्कर्ष :–

ताम्रपाषाणकालीन पुरास्थल आहड़ जो वर्तमान राजस्थान की मेवाड़ की भूमि से सम्बन्धित एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण पुरास्थल माना जाता है यह अपने आप में प्रभावशाली संस्कृति थी जहॉ पर वर्तमान से 4000 वर्ष पूर्व तीसरी सदी ई.पू. से दूसरी सदी ई. पू. तक के समय मे यह अपने अस्तिव में चरम पर थी जहॉ से कृषि पशुपालन ताम्र पाषाण के विभिन्न उपकरण मृदभाण्ड़कला व उनमे रंग संयोजन अनाज सहजने की उन्नत कला विद्यमान थी ।

REFERENCES

1. रामशरण शर्मा–प्राचीन भारत का इतिहास
2. RBSE BOOKS 10th राजस्थान का इतिहास एंव संस्कृति
3. NCERT CLASS 11th प्राचीन भारत